भरहुत स्तूप - अलंकृत ऐतिहासिक धरोहर

दिव्या सिंह
शोधार्थी इतिहास
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म0प्र0)

प्रस्तावना- ऐतिहासिक घटना और महापुरुष के स्मरण में निर्मित विशाल कृति को अवदनउमदजद्ध स्तूप कहते हैं। और किसी महापुरुष के अवशेष पर निर्मित चेतना स्थल को चैत्य 'जवचमद्ध' की संज्ञा दी जाती है। मध्यप्रदेश में विद्यमान सांची और भरहुत के स्तूप और चैत्य देनों हैं।

अतः भरहुत के कलात्मक महास्तूप में उस धर्म प्राण के अस्थि अवशेष अवस्थित किये गये थे जिसे संस्कृत कवि जयदेव ने करुणावतार, तुलसी ने कृपावतार, विवेकानन्द ने युगावतार कहा। वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन के मत से यदि कोई धर्म वैज्ञानिक मस्तिष्क को संतुष्ट करने योग्य है तो वह बुद्ध धर्म है। विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ने कहा बुद्ध कला के प्राण है। वह कालजयी कला भरहुत में दर्शित रही है।

भरहुत की कला सम्पदा को पहचानना सामन्ती संस्कृति से अलग जन-संस्कृति की खोज है। चार्वाकों, सांख्य आचार्यो, बौद्ध-जैन मतों ने इसी जन संस्कृति का पोषण किया है। यह श्रवण संस्कृति तप-त्याग, समता, शान्ति, करुणा, मैत्रीपूर्ण लोक कल्याण का आह्वान करती रही हुई सरिता की तरह प्रवाहवान रही है। साथ ही कर्म-श्रम, सौन्दर्य की प्रतिष्ठा, कारीगरों-शिल्पियों द्वारा निर्मित इन तमाम सुन्दर प्रतीकों में हमारी संस्कृति धरोहर के रूप में रक्षित रही है।

भरहुत का स्तूप मौर्य एवं शुंगकालीन कला की परिष्कृत वास्तु संरचनाओं में मान्य किया जाता है। वर्तमान में स्तूप पूर्णरूप से समाप्त सा हो गया है। इसके पुरावशेष ही शेष हैं। इस स्तूप को ईंटों व लाल रंग के प्रस्तरों से निर्मित किया गया था। लार्ड कनिंघम को 1873 ई. में मात्र 16 स्तम्भ, 80 सूचियां प्राप्त हुई थीं जो कलकत्ता के राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित हैं। कुछ पुरावशेष, पटना, प्रयाग, भारत कला भवन वाराणसी में भी रखे हुए हैं। यूरोप के संग्राहलयों में भी कुछ पुरावशेष संग्रहीत हैं। अभी तक इन्हीं पुरावशेषों के माध्यम से भरहुत स्तूप की कला का वर्णन विद्वानों विविध रूपों में किया है।

भरहुत-स्तूप का कलात्मक विवेचन -

भरहुत देश के उन प्रसिद्ध शिल्पों मे से एक है जो युगों-युगों की धार्मिक सामाजिक मान्यताओं कलाओं तथा जीवन के विविध पक्षों की स्समृतियों को अपने आप में संजोये हुए है। भरहुत का स्तूप मध्यप्रदेश के विंध्य प्रदेश क्षेत्र में विद्यमान था। भरहुत का प्राचीन नाम 'भारभुक्ति' था। यह प्रयाग से 125 किमी दूर इलाहाबाद-बुम्बई रेलमार्ग पर सतना नामक स्टेशन से 9 मील दक्षिण में स्थित है। यह मैहर नदी की घाटी के उत्तरी सिरे पर बसा हुआ था। भरहुत की भौगोलिक स्थिति प्राचीन काल में महत्वपूर्ण थी। यह स्थान वत्स जनपद की राजधानी कौशाम्बी से दशार्ण राज्य की राजधानी विदिशा जाने वाले मार्ग पर स्थित था। यहां से बांधवगढ़ होता हुआ एक मार्ग दक्षिण कौशल को जाता था। महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण इसका अपना अलग महत्व था। इस स्थल की भौगोलिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए यहां अशोक ने विशाल स्तूप का निर्माण कराया। द्वितीय सदी ई.पू. में मूल अशोकीय स्तूप का विस्तार किया गया। भरहुत से प्राप्त लेखों से ज्ञात होता है कि इसका परिसर निर्माण कार्य शुंग काल में भी कुछ हुआ। कनिंघम के अनुसार इस स्तुप का निर्माण कार्य भारतीय कलाकारों ने किया था। स्तूप की वेदिकाओं, तोरणों पर दान-दाताओं शिल्पियों व राजाओं के नाम दूसरी सदी ई.पू. की ब्राम्ही लिपि में लिखे गये हैं।भरहुत स्तूप का व्यास आधार पर 67 फीट 8 इंच था। यह स्तूप शिलाखण्डों की सुदृढ़ नींव पर बना था। ईंटों से निर्मित स्तूप के चतुर्दिक एक वृत्ताकार वेदिका बनी थी जिसमें चार दिशाओं में चार तोरण द्वार बने थे। तोरण की कुल ऊंचाई 12 फीट 8 इंच के लगभग थी। वेदिका का निर्माण लाल रंग के प्रस्तर खण्डों से किया गया था। स्तूप और वेदिका के मध्य प्रदक्षिणापथ था। स्तम्भों की ऊंचाई 7 फीट 2 इंच थी। उष्णीष सहित वेदिका की ऊंचाई 9 फीट थी। वेदिका में अनेक स्थानों पर स्तूप की आकृति उत्कीर्ण की गई है। स्तूप के तोरण एवं वेदिका की स्थापत्य रचना काष्ठ शिल्प की अनुकृति है। यह स्तूप सांची के स्तूप क्रमांक 1 से छोटा था, किन्तु शिल्पकला की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध था। भरहुत से दूसरी सदी ई.पू. की एक यक्षी प्रतिमा प्राप्त हुई है। यह प्रतिमा स्थानक मुद्रा में है। जो कला की दृष्टि से अद्भुत है।

स्तूप के तोरण द्वारों, स्तम्भों, उष्णीषों आदि पर विविध प्रकार की चित्रकारी उकेरी गई है। तोरणों पर मकरों के अलंकरण के अतिरिक्त, मानवों, गजों, सिंहों आदि के सुन्दर अभिप्राय उत्कीर्ण किए गये हैं। बुद्ध के मानवीय रूप का शिल्पांकन भरहुत में कहीं नहीं हुआ है। यहां प्राकृतिक दृश्यों के अतिरिक्त लोक जीवन की अनेक परम्पराओं और मान्यताओं को रोचक ढंग से प्रदर्शित किया गया है। बौद्ध साहित्य में कमल को स्वसृजन का प्रतीक बताया गया है। भरहुत की कला में कमल के विविध रूपों से शिल्पी की सृजनशीलता और कल्पना का आभाष होता है। भरहुत के शिल्प में वृक्ष, लता और पुष्प को बड़े ही रमणीक और मनोरम रूप में उत्कीर्ण किया गया है। इस काल में बुद्ध की प्रतिमा का निर्माण नहीं किया जाता था, क्यों कि बौद्ध धर्म में हीनयान सम्प्रदाय का बोलबाला था। महायान सम्प्रदाय का जन्म तब नहीं हुआ था। भगवान बुद्ध की उपस्थिति का बोध उनके छत्र, धर्मचक्र प्रवर्तन, पद चिन्ह, पादुका, भिक्षापात्र, बोधि वृक्ष आदि के रूप में कराया जाता था। ये प्रतीक वेदिका पर अत्यन्त आकर्षक रूप में उभारे गये हैं।

भरहुत में जिन घटनाओं, कथानकों आदि का शिल्पांकन हुआ है। वह मुख्यतः बुद्ध के जीवन तथा उस काल में समाज की घटनाओं से संबंधित है। जातक कथाओं का चित्रांकन बहुल मात्र में हुआ है। इसके अतिरिक्त यक्ष-यक्षी, मानव, लोक देवी, देवता तथा ऐतिहासिक दृश्यों का अंकन प्रचुर मात्रा में हुआ है। मातृशक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाली यक्षी का अंकन भी भरहुत की वेदिका में हुआ है। यक्षी की प्रतिमा कानों में कुंडल, गले में हार, कटि में करधनी, पैरों में कड़े पहने प्रदर्शित की गई है। जातक कथाओं में रूरू जातक की कथा का सजीव चित्रण किया गया है। इसमें बोधिसत्व रूरू (मृग) को डूबते हुए अभिजात की रक्षा करता है। षडदंत जातक, बंसंतर जातक, महाकपि जातक का भी अंकन भरहुत की कला में किया गया है। इसके अतिरिक्त भरहुत स्तूप की वेदिका पर मिग, नाग, यव, मझकीय, हंस, किन्नर, दशरथ, विधुर, स्त्री-पुरुष आदि और लगभग चालीस जातक कथाओं का अंकन भरहुत की कला में किया गया है। भरहुत स्तूप की वेदिका पर बौद्ध कलाकारों ने नाग के तीन स्वरूपों को कला में प्रस्तुत किया है। भरहुत स्तूप पर अप्सराओं के नृत्य तथा दरबार का दृश्य भी प्रदर्शित किया गया है।कामदेव की मृत्यु के बाद देवो द्वारा आनन्द मनाये जाने का दृश्य उत्कीर्ण किया गया है। इसमें मिश्रकेशी, अलम्बुषा, सुभद्रा तथा पद्मावती आदि अप्सराएं नृत्य करती हुई प्रदर्शित हैं। इनकी मुखमुद्रा तथा भाव भंगिमा बड़ी सुन्दर है। स्तूप की वेदिकाओं, तोरणों पर तत्कालीन जनजीवन से संबंधित अंकनों में राजाओं की मूर्तियां, अस्त्र-शस्त्र उत्कीर्ण किए गये हैं। भरहुत स्तूप में एक स्थान पर वस्त्रधारण किए हुए पुरुष आकृति हैं। जिसके नीचे 'कुपिरों यखों' (कुबेर यक्ष) लेख अंकित हैं। भरहुत की कला में वृक्षों, वनस्पतियों, लताओं, वृक्षों, पुष्पों एवं फलों के सुन्दर मोहक चित्र अंकित हैं। स्तूप की वेदिका पर उत्कीर्ण वृक्षों की अपनी विशेषताएं हैं। वृक्षों को उत्कीर्ण कर उनके नीचे लेख अंकित हैं जिसमें वृक्षों का स्वरूप मानुषी बुद्धों से किया गया है।
अनाथपिण्डक द्वारा जेतवन बिहार खरीदने की सुन्दर कथा का अंकन भरहुत स्तूप में किया गया है। बुद्ध के जीवन की दसरी चमत्कारिक घटना उनके अवतरण से संबंधित है, जिसमें बतलाया गया है कि भगवान बुद्ध अपनी माता मायादेवी जिनकी मृत्यु उनके जन्म के समय हो गई थी, तुषित स्वर्ग में शिक्षा देने गये। इस कथानक का उल्लेख भरहुत की वेदिका पर किया गया है भरहुत स्तूप में एक स्तम्भ पर एक राजा का नाम 'सुमनमरजो' लिखा गया है। विद्वान इसे अशोक राजा मानते हैं।

भरहुत के अभिलेख एवं शिलाकर्म से ज्ञात होता है कि यह स्तूप तीन विभिन्न कालान्तरों में निर्मित किया गया था। इस क्रम में सर्वप्रथम स्तूप का निर्माण एवं शिलाच्छादन तदनन्तर वेदिका एवं तोरण का निर्माण तथा धनभूति के शासनकाल में पूर्वी तोरण का निर्माण हुआ था। स्तूप पर दीप रखने के लिए लगभग सवा सौ दीपालय बने थे, जिन पर सैकड़ों दीप जगमगाते रहे होंगे। बौद्ध धर्म के दार्शनिकता पूर्ण प्रभाव के होते हुए भी भौतिक जीवन के विभिन्न आयामों का सरल निरूपण यहां मिलता है। जातक कथाओं के रूप में लोकजीवन, तत्कालीन समाज, पशु जगत आदि के चारित्रिक गुण दोष सहित धार्मिक अंकन किया गया है। स्त्री-पुरुषों के मुखों पर प्रफुल्लता से छलकता हुआ दिव्य आनंद, तत्कालीन कला में रसतत्व और अनंद की पुष्टि करता है। बौद्ध परम्परा में स्वीकृत देव समुदाय के अन्तर्गत इन्द्र, नाग, यक्ष, गंधर्व, सुपर्ण स्त्री-देवता, नृत्यरत अप्सराओं का नाम सहित अंकन हुआ है। विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक एवं काल्पनिक चित्रों, अलंकरणों व आलंकारिक अभिप्रायों का अंकन स्वाभाविकता, लयात्मकता तथा गत्यात्मकता के साथ किया गया है। अनेक आकृतियां अन्तःभावों के प्रदर्शन की दृष्टि से भावहीन एवं निर्विकार है। स्थापत्य के आकरों तथा अलंकारिक अभिप्रायों के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं है। बुद्ध के सांकेतिक चिन्ह अथवा राजाओं के अंकन अन्य आकृतियों की अपेक्षा बड़े हैं। भरहुत स्तूप के दो स्तम्भों को प्रसेनजीत तथा अजातशत्रु नाम दिया गया है। अजातशत्रु की यात्रा उसका हाथी से नीचे उतरने का चित्र, बुद्ध के चरणों की पूजा का दृश्य संबंधित लेख मे ''अजातशत्रु भगवतो वंदते'' खुदा हुआ है। जिसमें पूजा के लिए रथ पर प्रसेनजीत को अपने महल से निकलते हुए दिखाया गया है।

उपसंहार - भरहुत की कला सर्वथा स्वाभाविक लोकप्रिय रूप कराने वाली तथा तत्कलीन जनता के धार्मिक एवं लौकिक विश्वासों और क्रियाकलापों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती है। ललित कला की दृष्टि से भरहुत की कला मुख्यतः मध्य भारतीय स्वदेशी तत्वों की द्योतक है। भरहुत स्तूप की कला विभिन्न सजीव दृश्यों एवं आकर्षक अलंकरणों के कारण मानव हृदय की आध्यात्मिक सौन्दर्य पिपासा को शान्त करती हुई तत्कालीन भारत की उत्कृष्ट कला परम्परा का सुन्दरतम रूप प्रस्तुत करती है। यह कला भारतीय अन्तरात्मा की अभिव्यक्ति है जो बाह्य प्रभाव से पूर्णतः मुक्त है। साथ ही भरहुत की वेष्ठनियों पर अंकित बौद्ध संस्कृति का सार है। यही भारत को बौद्ध पहचान देने की आगाज थी और यही आज की आवाज है।

****

संदर्भ -

1.टी. डब्ल्यू रिस - डेविड्स की बृद्धिष्ट इंडिया, 1971, पृ. 324
2.परमेश्वरी लाल गुप्त - भारतीय वास्तुकला, वाराणसी, 1989 पृ. 32
3.वासुदेव उपाध्याय - प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मंदिर, विहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1989, पृ. 56
4.के.डी. बाजपेयी - भारतीय कला, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1997 पृ.46
5.महेशचन्द्र जोशी - युग युगीन भारतीय कला, जोधपुर, 1995, पृ. 106
6.वाचस्पति गैरोला - भारतीय संस्कृति और कला, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1985, पृ. 26
7.भगवत शरण उपाध्याय - भारतीय कला का इतिहास, नई दिल्ली, 1981, पृ. 61
8.रतन लाल मिश्र - स्मारकों का इतिहास एवं स्थापत्य कला, जयपुर, 1999, पृ. 71
9.ब्रजभूषण, श्रीवास्तव - प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, वाराणसी, 1998, पृ. 290
10.राजकिशोर सिंह - भारत के प्राचीन स्मारक नई दिल्ली, 1991, पृ. 14